

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 9, इब्रानियों 10:1 9-39: उद्धार पाने के लिए दृढ़ रहें

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

लेखक ने अपने पूरे उपदेश में व्याख्या और उपदेश के बीच बारी-बारी से बदलाव किया है, लेकिन उसने व्याख्या और उपदेश के सबसे बड़े खंडों को बीच में और अंत में टाल दिया है। इब्रानियों 7:1 से 10:18 यीशु के पुरोहिती कार्य और उसके महत्व के बारे में व्याख्या का एक ठोस खंड है। अब, उपदेश के अंत तक 10, 19 से विस्तार करते हुए, हम उपदेश के एक लंबे खंड पर आते हैं।

इस उपदेश के भीतर पहला खंड, 10:19 से 25, विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। लेखक ने अपने श्रोताओं के लिए इसे उजागर किया है क्योंकि 10:19 से 24 की भाषा बहुत ही खास तौर पर इब्रानियों 4:14 से 16 की भाषा पर लौटती है, जो उपदेश यीशु के पुरोहितत्व के बारे में इस केंद्रीय शब्द से पहले था। ऐसा करने में, वह अनिवार्य रूप से श्रोताओं को मसीह में अपनी आशा के अंगीकार या घोषणा को बनाए रखने और साहस के साथ ईसाई समुदाय के करीब आते रहने के लिए अपने उपदेश के दिल की पहचान करता है, जहां अनुग्रह के सिंहासन, भगवान के सिंहासन तक भी पहुंचा जा सकता है।

4:14 से 16 के उपदेश को दोहराते हुए, इब्रानियों 10:19 से 25 परमेश्वर तक पहुँच के मसीह के महँगे उपहार के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया की रूपरेखा प्रस्तुत करता है, लेकिन इस प्रतिक्रिया के सामुदायिक पहलू पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है, मसीहियों के एक साथ इकट्ठा होने को न छोड़ने का महत्व। वह सभा वह भी है जहाँ कोई अनुग्रह के सिंहासन के निकट पहुँचता है। इब्रानियों 10, 26 से 31 मसीह के महँगे उपहारों को अनदेखा करने या फेंक देने की अन्यायपूर्ण, कृतघ्न प्रतिक्रिया के बाद होने वाले भयानक परिणामों को चित्रित करके इस सकारात्मक उपदेश का समर्थन करता है।

यह समूह से दूर जाने को जानबूझकर किए गए पाप के रूप में रणनीतिक रूप से व्याख्या करता है जिसके लिए कोई बलिदान शेष नहीं है। 10:32 से 39 में, लेखक श्रोताओं को बस उसी मार्ग पर चलते रहने के लिए आमंत्रित करता है जिस पर उन्होंने पहले के समय में बहुत ही शानदार तरीके से काम किया था और अभी भी काफी हद तक चल रहे थे और प्राचीन अधिकार के उद्धरण के साथ समाप्त होता है जो लाभकारी प्रभावों, वफादार और दृढ़ रहने के लाभकारी प्रभावों, साथ ही पीछे हटने या दूर हो जाने के विनाशकारी प्रभावों की पुष्टि करता है। लेखक स्पष्ट रूप से श्रोताओं को उन लोगों के साथ पहचान करने के लिए आमंत्रित करता है जो विश्वास प्रदर्शित करते हैं और वफादार और दृढ़ रहते हैं, न कि उन लोगों के साथ जो पीछे हट जाते हैं।

आत्मा के संरक्षण की ओर ले जाने वाले गुण के रूप में विश्वास या भरोसे की पहचान लेखक को अध्याय 11 में विश्वास के अर्थ और स्थिति को विकसित करने की ओर ले जाती है। इस प्रकार, विश्वास का प्रसिद्ध अध्याय, पिस्टिस या विश्वास के गुण की प्रशंसा, 10:19 से 39 में दिए गए उपदेश से स्वाभाविक रूप से उभर कर आता है। इब्रानियों 12:1 से 3 में विश्वास की प्रशंसा का

समापन यीशु के स्वयं के उदाहरण पर आधारित उपदेश के साथ किया गया है, जो विश्वास को सबसे पूर्ण और सबसे उत्तम तरीके से व्यक्त करता है।

यह अध्याय 12 के शेष भाग में दृढ़ता के लिए संबंधित उपदेशों के अनुक्रम में एक सेग भी प्रदान करता है। उपदेश अध्याय 13 में नैतिक निर्देशों और उपदेशों के साथ समाप्त होता है जो विकसित करते हैं कि किसी को अध्याय 12, श्लोक 28 के उपदेश को कैसे पूरा करना है, अर्थात् कि विश्वासियों को कृतज्ञता को बनाए रखना चाहिए जिसके माध्यम से वे एक अच्छे तरीके से भगवान की पूजा करते हैं। आपसी सेवा, ईश्वरीय संरक्षक में निरंतर विश्वास, यीशु के प्रति निष्ठा और पूजा सभी कृतज्ञता की इस अभिव्यक्ति के आवश्यक पहलू हैं जो विश्वासियों को अंतिम झटकों, अर्थात् अस्थिर राज्य में प्रवेश पर प्राप्त हो रहे हैं।

उपदेशक ने अध्याय 5 में चेतावनी दी थी कि संदेश को समाप्त करने के बाद, पद 11 को सुलझाना लंबा और कठिन होगा, और अब वह उन सत्यों को लागू करता है जिन्हें वह श्रोता की स्थिति पर प्रकट कर रहा था। इसलिए, बहनों और भाइयों, चूंकि यीशु के लहू के द्वारा हमें पवित्र स्थानों में प्रवेश करने का साहस मिला है, जो उसने परदे के माध्यम से, अर्थात् अपने शरीर के माध्यम से हमारे लिए खोला है, और चूंकि हमारे पास परमेश्वर के घराने का एक महान याजक है, तो आइए हम सच्चे मन और भरोसे के साथ उसके समीप जाएँ, अपने हृदय को बुरे विवेक से दूर करके और अपने शरीर को स्वच्छ जल से धोकर। आइए हम आशा के अंगीकार को दृढ़ रखें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह विश्वसनीय है, और आइए हम प्रेम और भले कामों की बाढ़ के लिए एक दूसरे पर ध्यान दें, एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसा कि कुछ लोगों की आदत है, लेकिन एक दूसरे को प्रोत्साहित करें, और यह और भी अधिक है क्योंकि आप दिन को निकट आते देखते हैं।

लेखक यहाँ दो ज़रूरी बातों पर प्रकाश डालता है जो अब संबोधित करने वालों के पास हैं। सबसे पहले, पवित्र स्थानों में प्रवेश करने के लिए साहस की आवश्यकता है। दूसरा, परमेश्वर के घराने पर एक महान महायाजक को उन्हें अपनी ईसाई यात्रा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

उन्हें वह दिया गया है जिसका आनंद किसी भी पूर्व युग के लोगों ने नहीं लिया है, वह पवित्रता जो उन्हें न केवल सांसारिक, बल्कि स्वर्गीय पवित्र स्थान और परम पवित्रतम स्थान की दहलीज पार करने और परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने की अनुमति देगी। पवित्र स्थानों में प्रवेश करने के लिए अब विश्वासियों के पास जो अधिकार है, वह मसीह के पवित्र स्थानों में पहले के प्रवेश की याद दिलाता है, विशेष रूप से हमारे अग्रदूत के रूप में। यीशु पर्दे के पीछे से गुजरे, और विश्वासियों की आशा वह बंधन है जो उन्हें उनसे और उनके भाग्य से जोड़े रखता है।

अब, लेखक पर्दे के माध्यम से उस नए और जीवित मार्ग की खोज का जश्न मनाता है, पवित्र स्थानों में जाने का मार्ग, जो पहले वाचा के तहत अस्पष्ट था, और वह इस तथ्य का जश्न मनाता है कि वह और उसकी मंडली भी पार करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। परमेश्वर तक उनकी पहुँच और परमेश्वर के घराने में उनकी अंतर्निहितता के बारे में इतनी शानदार बात करके, लेखक विश्वासियों में आत्मविश्वास पैदा करना चाहता है, उन्हें उनकी चुनौतियों के बीच एक

आशावादी अभिविन्यास देता है। उनका गौरवशाली भाग्य तब तक सुनिश्चित है जब तक उनके पास आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास और साहस है।

उनके द्वारा भोगी जाने वाली सुविधाओं को देखते हुए, लेखक विश्वासियों से निकट आने का आग्रह करता है। यह पीछे हटने के विपरीत है, उनके सामने वैकल्पिक कार्यवाही है, जिसके बारे में लेखक को डर है कि कुछ श्रोताओं के मन में यह बात है और वह जानता है कि कुछ अन्य लोगों ने भी इसे अपनाना शुरू कर दिया है क्योंकि वे एक साथ इकट्ठा होने से पीछे हट रहे हैं। उन्होंने यीशु के बलिदान के लाभों को ग्रहण करके, ईश्वर के प्रति इस आत्मविश्वासपूर्ण दृष्टिकोण के लिए शरीर और हृदय दोनों में शुद्ध होकर, ईश्वर की पवित्र उपस्थिति में आने के लिए खुद को तैयार किया है।

यीशु के लहू ने, रूपकात्मक रूप से कहें तो, उनके हृदयों पर छिड़का है ताकि उन्हें बुरे विवेक के प्रदूषण से शुद्ध किया जा सके, जो 9 पद 1 से 10 पद 18 का प्राथमिक विषय रहा है। इस आंतरिक सफाई का बाहरी और दृश्यमान संकेत उनके शरीर को स्वच्छ जल से धोना है, संभवतः बपतिस्मा का संदर्भ है, जो ईसाई समुदाय में एक सार्वभौमिक प्रवेश के रूप में कार्य करता है। इस बिंदु पर लेखक द्वारा शुद्धता की भाषा का प्रयोग, हृदय पर छिड़काव करना और शरीर को स्वच्छ जल से धोना, उन मतभेदों को भी मजबूत करेगा और इसलिए, ईसाई समूह के अंदर के लोगों और बाहर के लोगों के बीच की सीमाएँ, जो अपने जीवन की विशेषता वाले मृत कार्यों से अशुद्ध रहते हैं।

शुद्धिकरण और पवित्रीकरण की इस अनूठी प्रक्रिया द्वारा अलग किए गए लोगों के रूप में, विश्वासी अब अपने पड़ोसियों के समान नहीं हैं, बल्कि उन्हें स्वयं ईश्वर द्वारा अपने पड़ोसियों से अलग कर दिया गया है। और यह उनके लिए बहुत फायदेमंद है, चाहे उनके पड़ोसी उन्हें कितना भी अलग महसूस कराने की कोशिश करें। निकट आना एक निश्चित रूप से कार्रवाई के लिए एक अस्पष्ट सुझाव है, लेकिन कम से कम यह श्रोताओं को ईसाई समुदाय के साथ रहने की ओर उन्मुख करने का काम करता है जहाँ ईश्वर को पाया जा सकता है और अपनी यात्रा को रोकने के बजाय अपने ईसाई तीर्थयात्रा के लक्ष्य की ओर बढ़ना जारी रखना चाहिए।

लेखक श्रोताओं को एक बार फिर आशा की स्वीकारोक्ति को अडिग रखने के लिए कहता है, जैसा कि उसने पहले 3, पद 6 और 4 पद 14 में किया था। दोहराव ईसाई संस्कृति की मूल मान्यताओं और अपेक्षाओं को थामे रखने के लिए इस उपदेश के महत्व को दर्शाता है, साथ ही इस आशा के सार्वजनिक बयान को बिना किसी हिचकिचाहट के थामे रखना है, खासकर ईसाई समूह के साथ लगातार दिखाई देने वाले और सार्वजनिक जुड़ाव के माध्यम से और प्रत्येक सदस्य द्वारा एक दूसरे में निरंतर निवेश के माध्यम से। उपदेशक यहाँ जो तर्क देता है वह है परमेश्वर की वफ़ादारी या विश्वसनीयता, जिसने वादा किया है।

यह, निश्चित रूप से, अब तक के उपदेश का एक प्रमुख विषय रहा है, अध्याय 3 में विकसित ईश्वर की विश्वसनीयता को पहचानने और उसका सम्मान करने में निर्गमन पीढ़ी की विफलता से लेकर, अध्याय 6 में वर्णित अब्राहम को उसके भरोसे की सहायता करने के लिए ईश्वर के आश्वासनों तक, अध्याय 6 से 8 में उपदेशक के श्रोताओं को उनके स्वयं के भरोसे को मजबूत

करने के लिए ईश्वर के आश्वासनों तक, विशेष रूप से यीशु के शाश्वत याजकत्व के बारे में ईश्वर की शपथ और यिर्मयाह 31 में नए करार के बारे में ईश्वर की भविष्यवाणी जिसका यीशु ने उद्घाटन किया। जंगल की पीढ़ी के उदाहरण ने श्रोताओं को विशेष रूप से तैयार किया है कि वे वादा करने वाले की विश्वसनीयता को पहचानने में विफल न हों। यीशु ने जो आशा उन्हें दी है, उसके संबंध में आंतरिक दृढ़ विश्वास और सार्वजनिक गवाही के अलावा, लेखक दुनिया की शत्रुता की धारा के खिलाफ उनकी आगे की यात्रा में उनकी सहायता करने के लिए अन्य ईसाइयों के प्रति निरंतर बढ़ते निवेश और देखभाल का आग्रह करता है।

इस बिंदु पर, अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों के पाठकों को एक समस्या का सामना करना पड़ेगा। उदाहरण के लिए, NRSV, अध्याय 10 की आयत 24 का अनुवाद इस प्रकार करता है कि आइए हम इस बात पर विचार करें कि एक दूसरे को प्रेम और अच्छे कर्मों के लिए कैसे उकसाया जाए। इसी तरह RSV, NIV और यहाँ तक कि NRSVUE के अपडेटेड संस्करण की तुलना की जा सकती है।

इस बिंदु पर, ग्रीक भाषा हमें केवल यही बताती है कि, आइए हम एक दूसरे पर विचार करते रहें, ताकि प्रेम और अच्छे कार्यों का विस्फोट हो। दूसरे पर विचार करने का उद्देश्य यह पता लगाना नहीं है कि दूसरे को कैसे प्रेम दिखाने के लिए प्रेरित किया जाए और खुद को अधिक हद तक दयालुता के कार्यों में निवेशित किया जाए। इस तरह के अनुवाद, जैसे कि एनआईवी या एनआरएसवी में पाया जाता है, के लिए हमें विचार करने और एक दूसरे के बीच पाठ में प्रेरित करने के विचार को आयात करने की आवश्यकता होती है।

हालाँकि, ग्रीक में एकमात्र क्रिया है काटा नाओमेन। आइए हम विचार करते रहें। आइए हम एक दूसरे का निरीक्षण और ध्यान रखें।

एक दूसरे को इस क्रिया का उद्देश्य माना जाता है, और प्रेम और अच्छे कार्यों का आवेग या विस्फोट क्रिया का उद्देश्य या परिणाम है। लेखक प्रत्येक ईसाई को अपने साथी शिष्यों पर ध्यान देने, उन्हें करीब से देखने, उनके संघर्षों, उनकी चुनौतियों को देखने और उनमें निवेश करने के परिणाम के साथ वास्तव में उन्हें देखने के लिए कहता है। इस तरह का देखना देखभाल का जन्मस्थान है, जो बदले में दूसरे को अपना बोझ उठाने और उस भलाई में हिस्सा लेने में मदद करने के लिए उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई को जन्म देता है जो भगवान उसके लिए चाहते हैं।

इसलिए, कुछ हद तक कार्यात्मक समतुल्य मोड में एक बेहतर अनुवाद होगा, आइए हम देखना जारी रखें, वास्तव में एक दूसरे को देखें ताकि हम एक दूसरे से और भी अधिक प्यार करें और एक दूसरे के लिए अच्छा करें। यह पूरे इब्रानियों में लेखक के उपदेशों से जुड़ता है कि ईसाई समुदाय के भीतर इस तरह के रिश्ते और समर्थन संरचनाएँ बनाएँ जो चर्च के भीतर मौजूद प्यार और संगति और आपसी सम्मान को छोड़ने के बजाय बाहर से होने वाली उपेक्षा और दुश्मनी को सहना संभव, यहाँ तक कि बेहतर बनाती हैं। इब्रानियों 10 पद 25 इस बिंदु को मजबूत करता है, गलत कार्रवाई के तरीके को फायदेमंद कार्रवाई के तरीके से अलग करने के लिए विरोधाभास का उपयोग करते हुए, एक साथ इकट्ठा होना न छोड़ें बल्कि एक दूसरे को प्रोत्साहित करें।

अब, लेखक जानता है कि कुछ, शायद मण्डली के बहुत कम सदस्य, पीछे हटने लगे हैं। हालाँकि, इस तरह की वापसी कृतज्ञता की सभी भावनाओं के विपरीत है, जिसमें देने वाले के प्रति खुले तौर पर अपने ऋण की घोषणा करना और महान उपहार देने वाले उपकारकर्ता की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करना शामिल है। कुछ लोगों के पीछे हटने से वे लोग भी हतोत्साहित होते हैं जो बचे रहते हैं, अपनी महंगी आशा को थामे रखने के उनके दृढ़ संकल्प को कम करते हैं।

यह समूह के समग्र संसाधनों को भी कम करता है जिससे एक दूसरे को दृढ़ रहने में मदद मिलती है। पीछे हटने के बजाय, उन्हें एक दूसरे को दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करने और एक दूसरे में अपनी ऊर्जा और संसाधनों का अधिक से अधिक निवेश करने के लिए अधिक स्पष्ट होने का आग्रह किया जाता है। लेखक यहाँ रणनीतिक रूप से उन्हें उनके स्वीकारोक्ति के युगांतिक आयाम की याद दिलाता है।

मसीह के दूसरे आगमन का दिन, ईश्वर के न्याय का दिन, हमेशा करीब आता जा रहा है। जैसे-जैसे युगांतशास्त्रीय घड़ी आगे बढ़ती है, विश्वासी को कम उत्साही होने के बजाय अधिक उत्साही होना चाहिए, क्योंकि यह विश्वासियों के लिए पुरस्कार का दिन होगा; इसकी निकटता के चिंतन से अंतरिम में दृढ़ता, प्रतिबद्धता और निवेश को बनाए रखने में मदद मिलेगी। यह विपरीत के लिए दंड का दिन भी होगा, जैसा कि निम्नलिखित अंश लेखक द्वारा प्रस्तुत सबसे गंभीर चेतावनियों में से एक में विकसित होगा।

लेखक अपने सकारात्मक उपदेश को वैकल्पिक मार्ग पर विचार करके समर्थन करता है, एक ऐसी जीवनशैली पर लौटता है जिसे अविश्वासी पड़ोसी स्वीकार करेंगे, और ईसाई संगति के साथ दृश्यमान संगति से दूर हो जाना। उपदेशक यह भाषा में करता है जो इब्रानियों 6, पद 4 से 8 की दृढ़ता से याद दिलाती है। वह सर्वोच्च कृतघ्नता को प्रदर्शित करने के रूप में कार्य करने के तरीके की निंदा करता है, जो अंततः नुकसानदेह है क्योंकि यह दोनों को अनंत अपमान और मृत्यु से भी बदतर भाग्य की ओर ले जाता है। क्योंकि यदि हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद जानबूझकर पाप करना जारी रखते हैं, तो पापों के लिए कोई बलिदान नहीं रह जाता है, बल्कि न्याय की एक भयानक उम्मीद और एक उत्साही आग होती है जो विरोधियों को भस्म करने के कगार पर होती है।

जो कोई मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करता है, वह दो या तीन गवाहों के कहने पर बिना दया के मार डाला जाता है। जो लोग परमेश्वर के पुत्र को पैरों तले रौंदते हैं और वाचा के उस लहू को जिसके द्वारा वे पवित्र ठहराए गए थे, अपवित्र समझते हैं, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान करते हैं, वे कितने अधिक दण्ड के योग्य ठहरेंगे? क्योंकि हम उसको जानते हैं, जिसने कहा, पलटा लेना मेरा काम है। मैं ही बदला चुकाऊंगा।

और फिर, प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है। यहाँ लेखक के मन में जो बात है वह यह है कि यदि हम जानबूझकर पाप करते रहें, तो यह अध्याय 10, श्लोक 24 और 25 द्वारा निर्धारित है।

यह उन निरंतर पापों का सामान्य संदर्भ नहीं है जिनके विरुद्ध विश्वासी संघर्ष कर सकते हैं, बल्कि अधिक विशेष रूप से, उन लोगों के कार्यों का संदर्भ है, जो उद्धार की सच्चाई और ईश्वर द्वारा प्रदान की गई आशा को जानने के बावजूद, विश्वासी समुदाय और मसीह के साथ अपने संबंध को छिपाने या त्यागने के अस्थायी लाभों को चुनते हैं। ऐसे लोग पापियों की मित्रता और पापियों के बीच स्वीकृति के अस्थायी आनंद को उन कठिनाइयों से अधिक पसंद करते हैं जो ईश्वर के लोगों को पापियों की शत्रुता के कारण इस दुनिया में सहन करनी पड़ती हैं। जब लेखक कहता है कि यदि हम जानबूझकर या स्वेच्छा से पाप करना जारी रखते हैं, तो वह टोरा में किए गए अंतर का संदर्भ दे रहा है, विशेष रूप से संख्या अध्याय 19, श्लोक 22 से 31 में, अनजाने में किए गए पापों के बीच, जिनके लिए निर्धारित बलिदान हैं और अहंकार से या अहंकार से किए गए पाप जिनके लिए केवल दंड है।

ग्रीको-रोमन नैतिकतावादी भी जानबूझकर गलत काम करने को कठोर दंड के योग्य मानते हैं। उपदेशक यह दावा कर रहा है कि ईसाई समुदाय से अलग होना स्वेच्छा से चुना गया है, जानबूझकर चुना गया है, बाहरी ताकतों द्वारा मजबूर नहीं किया गया है। दलबदलू या कायर आस्तिक को यह सोचने की सुविधा नहीं दी जाती है कि जब वह यीशु से अपने संबंध को छुपाता है तो वह व्यावहारिक आवश्यकता के आगे झुक जाता है।

ऐसा मार्ग एक समझौते का स्वैच्छिक, जानबूझकर उल्लंघन है, जो अपने उपकारकर्ताओं के प्रति न्यायपूर्ण और आभारी होने का सार्वभौमिक नियम है। जब लेखक यहाँ कहता है कि पापों के लिए अब कोई बलिदान नहीं बचा है, तो वह उसी भाषा को दोहरा रहा है जिसका उसने अध्याय 10, श्लोक 18 में कुछ श्लोक पहले इस्तेमाल किया था। वहाँ, यह पुष्टि कि पापों के लिए अब कोई बलिदान नहीं बचा है, यीशु द्वारा दी गई निर्णायक क्षमा और विवेक की शुद्धि का प्रमाण प्रदान करता है।

अब, हालांकि, एक बार बनने के बाद यीशु के माध्यम से परमेश्वर के साथ उस रिश्ते को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करने के लिए उसी भाषा का उपयोग किया जाता है। यह न केवल यीशु के खुद को एक बार के लिए अर्पित करने की प्रकृति के कारण है, एक ऐसा बलिदान जिसे दोहराया नहीं जाना चाहिए, बल्कि परमेश्वर और यीशु, मध्यस्थ, और यीशु के खून के प्रति गंभीर अपमान के कारण भी है जो उस व्यक्ति द्वारा दिया जाएगा जो इस तरह के उपहारों और इस तरह के रिश्ते को बनाए रखने की कीमत के लायक नहीं समझता है। ऐसे लोगों के लिए जो कुछ बचा है वह है परमेश्वर का न्याय, विरोधियों को भस्म करने के कगार पर एक उत्सुक आग की उम्मीद, जैसा कि लेखक ने श्लोक 27 में कहा है।

लेखक यशायाह 26, श्लोक 11 से भाषा का उपयोग करता है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि ईर्ष्या अशिक्षित लोगों को ले जाएगी, और आग विरोधियों को भस्म कर देगी। लेकिन हमारे लेखक ने छवि को बढ़ाने के लिए इस बाइबिल की भाषा को बढ़ाया है। ईर्ष्या अब आग को एक उत्साही आग के रूप में वर्णित करता है।

लेखक द्वारा भविष्य की क्रिया के स्थान पर एक क्रियाविशेषण के साथ यूनानी क्रिया मेलों के उपयोग के कारण परिणाम अधिक निकट दिखाई देते हैं, एक उत्साही आग जो विरोधियों को

भस्म करने के कगार पर है, जो विरोधियों को भस्म करने वाली है। जो लोग लेखक द्वारा प्रस्तावित कार्रवाई के मार्ग को अस्वीकार करते हैं, आइए हम निकट आते रहें, तब वे खुद को न्याय की भयावह संभावना का सामना करते हुए पाते हैं, एक आगामी वास्तविकता, जिसकी गंभीरता को लेखक द्वारा श्लोक 28 और 29 में प्रस्तुत किए गए छोटे से बड़े तर्क द्वारा बढ़ाया जाता है। इस तर्क में छोटा मामला व्यवस्थाविवरण 17, श्लोक 6 से आता है, जहाँ मूसा की वाचा के जानबूझकर उल्लंघन के परिणामस्वरूप दो या तीन गवाहों की गवाही पर निष्पादन हुआ।

इस तर्क में अघोषित आधार यह है कि यीशु मूसा से अधिक सम्मान के पात्र हैं, एक आधार जो इब्रानियों के अध्याय 3, श्लोक 1 से 6 में काफी पहले स्थापित किया गया था। लेखक का निष्कर्ष, एक प्रश्न के रूप में व्यक्त किया गया है, यीशु और विश्वासियों के बीच नए बंधन के जानबूझकर उल्लंघन के लिए आनुपातिक रूप से अधिक दंड की बात करता है, जिसका अर्थ है मृत्यु से भी बदतर भाग्य। लेखक समूह के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता से दूर जाने को स्पष्ट शब्दों में प्रस्तुत करता है, ताकि इस तरह की कार्रवाई को इतना भयावह बनाया जा सके कि यह अकल्पनीय हो। ऐसा लगता है जैसे वह कह रहा हो, अगर आप अपने पड़ोसी की स्वीकृति को भगवान के अनुग्रह से अधिक महत्व देते हैं, तो समूह से अलग होने पर आप वास्तव में क्या कर रहे हैं, इस पर गौर करें।

इस पाठ्यक्रम को भगवान के सम्मान पर तीन गुना हमले के रूप में चित्रित किया गया है, विशेष रूप से जघन्य इसलिए क्योंकि इस तरह का हमला संरक्षक-ग्राहक संबंध का उल्लंघन करता है, जो कृतज्ञता नहीं बल्कि ईश्वरीय उपकारकर्ता का अपमान करता है। सबसे पहले, धर्मत्यागी वह है जिसने ईश्वर के पुत्र को रौंद दिया है। यह याद दिलाना कि यीशु का शीर्षक ईश्वर का पुत्र है, जो पूरे धर्मोपदेश में दिखाई दिया है, दोनों अपराध की धृष्टता को बढ़ाता है और अपमान को ईश्वर के अपने सम्मान के संदर्भ में रखता है और इसलिए, अपराधियों से संतुष्टि प्राप्त करने के लिए ईश्वर का अनुमानित दृढ़ संकल्प है।

यह एक बहुत ही विडंबनापूर्ण और अनुचित छवि है जिसे श्रोताओं को इस तरह के अपमान को करने से रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वास्तव में, जिसे अब तिरस्कृत किया जा सकता है और इस तरह कुचला जा सकता है, वह वही है जिसके पैरों के नीचे उसके सभी दुश्मन जल्द ही अधीनता में आ जाएंगे, जैसा कि लेखक ने इब्रानियों 1:13 और 10:13 में दावा किया है। दूसरा, जो व्यक्ति बहक जाता है, उसने वाचा के खून को अपवित्र माना है जिसके द्वारा उसे पवित्र किया गया था, जिसके द्वारा विश्वासियों को उनकी ओर से यीशु की इतनी कीमत पर ईश्वरीय अनुग्रह के लिए निर्णायक रूप से बहाल किया गया था। अंत में, जो व्यक्ति यह निर्णय लेता है कि मध्यस्थ के लाभ, जिनमें से सबसे बड़ा संरक्षक के रूप में ईश्वर तक पहुँच है, समाज के दुर्व्यवहार और तिरस्कार को सहन करने के लिए पर्याप्त मूल्य के नहीं हैं, वे इस मूल्य की कमी के लिए सार्वजनिक गवाही दे रहे हैं यदि वे ईसाई समूह से अलग हो जाते हैं और इस प्रकार वे अनुग्रह की भावना का अपमान करते हैं।

दान के बीच, अपमान या अपमान और अनुग्रह या दयालु स्वभाव के बीच का अंतर इससे अधिक स्पष्ट नहीं हो सकता। वास्तव में, अनुग्रह और उपकार के वादे का अपमान करके बदला लेना एक साथ अत्यधिक अनुचित और अविश्वसनीय रूप से मूर्खतापूर्ण है। इस प्रकार दृढ़ न रहना

अपने आप में शर्मनाक है क्योंकि यह कृतघ्नता को दर्शाता है, जो सबसे घटिया दोष है, लेकिन इसके सबसे गंभीर परिणाम भी होते हैं।

यीशु की महंगी मध्यस्थता से जितने बड़े लाभ प्राप्त हुए, यीशु के अनुग्रह और परमेश्वर के अनुग्रह को ठुकराने से उतना ही बड़ा नुकसान हुआ। यह धारणा कि कृतघ्न, और उससे भी अधिक, जो किसी उपकार के बदले अपमान करता है, दण्ड का पात्र है, पहली सदी में आम बात है। परमेश्वर और पुत्र के सम्मान को चुनौती देने का परिणाम अपराधी को दण्ड देकर परमेश्वर द्वारा उनके सम्मान की पुष्टि करना है।

गलत की भयावहता का विस्तार निश्चित रूप से अध्याय 10, श्लोक 29 में आरोप के इस तीन गुना वर्णन का प्रभाव है, और यह सुझाव कि इस तरह के अपमान के लिए कोई पर्याप्त सजा नहीं हो सकती है। लेखक व्यवस्थाविवरण 32, मूसा के गीत के पाठ के साथ इस तरह की सजा की निश्चितता का समर्थन करता है। व्यवस्थाविवरण 32 का मुख्य विषय यह तथ्य है कि परमेश्वर अपने सम्मान के उल्लंघन का बदला लेता है, और इसलिए हम इब्रानियों 10, श्लोक 30 और 31 में पढ़ते हैं, क्योंकि हम उस व्यक्ति को जानते हैं जिसने कहा, प्रतिशोध मेरा काम है, मैं ही बदला चुकाऊंगा।

और फिर, प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। प्रतिशोध मेरा है; मैं इसे व्यवस्थाविवरण 32, पद 35 के पाठ के रूप में चुकाऊंगा, पद के हिब्रू और ग्रीक पाठों को मिलाते हुए। अपने मूल संदर्भ में, यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को उनके शत्रुओं द्वारा रौंदे जाने के बाद उन्हें सही ठहराने का वादा था।

हालाँकि, यहाँ यह परमेश्वर के लोगों के प्रति निर्देशित एक चेतावनी बन जाती है। अगला पाठ, प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा, निम्नलिखित श्लोक, व्यवस्थाविवरण 32, श्लोक 36 से लिया गया है। फिर से, इसके मूल संदर्भ में, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर अपने लोगों को सही ठहराने जा रहा है।

प्रभु अपने लोगों को सही ठहराएगा और उन पर दया करेगा, यह हिब्रू में पूरी आयत है। हालाँकि, सही ठहराने के लिए हिब्रू क्रिया को सेप्टुआजेंट में न्यायकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो व्यवस्थाविवरण का ग्रीक अनुवाद है। जबकि ग्रीक क्रिया क्रिनेन का अर्थ सही ठहराना भी हो सकता है, अनुवाद आयत को पढ़ने की संभावना को खोलता है, जैसा कि हमारे लेखक ने किया है, अर्थात् अपने लोगों के बारे में परमेश्वर के आगामी न्याय की चेतावनी के रूप में।

यह निष्कर्ष श्रोताओं के लिए इस बात को पुष्ट करता है कि उनके सामने सबसे बड़ा खतरा ईश्वर को न्यायाधीश के रूप में सामना करना है, न कि अपने पड़ोसियों के उत्पीड़न और अस्वीकृति को सहना, क्योंकि वास्तव में, जीवित ईश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है। जैसा कि लेखक ने इस उपदेश में पहले डर और आत्मविश्वास की अपील के बीच बारी-बारी से किया है, वह अब 1026-31 की भयावह चेतावनी के बाद उन विचारों को भी शामिल करता है जो विश्वास के लिए अनुकूल होंगे यदि संबोधित करने वाले लगातार बोलते रहें। पुराने दिनों को याद करें, जिसमें, प्रबुद्ध होने के बाद, आपने कष्टों की एक बड़ी प्रतियोगिता को सहन किया, आंशिक रूप

से निंदा और परीक्षाओं के माध्यम से एक तमाशा बन गए और आंशिक रूप से खुद को इस तरह से व्यवहार किए जाने वालों के भागीदार बना दिया।

क्योंकि आपको जेल में बंद लोगों के प्रति सहानुभूति थी, और आपने अपनी संपत्ति जब्त होने पर खुशी से स्वीकार किया, क्योंकि आप जानते थे कि आपके पास बेहतर और स्थायी संपत्ति है। समूह की अपनी पिछली उपलब्धियों की अपील अक्सर भविष्य के प्रयासों के लिए प्रोत्साहन के आधार के रूप में काम करती है। उदाहरण के लिए, टैसिटस के एग्रीकोला के चरम पर, रोमन जनरल इन शब्दों के साथ अपने सैनिकों को इकट्ठा करता है: हमने जो लंबी सड़क तय की है, जिन जंगलों से होकर हमने अपना रास्ता बनाया है, जिन मुहल्लों को हमने पार किया है, ये सब हमारे श्रेय और सम्मान के लिए हैं जब तक हम अपनी आँखें सामने की ओर रखते हैं।

मैं आपको प्रोत्साहित करने के लिए अन्य सेनाओं के उदाहरण उद्धृत करूँगा। जैसी परिस्थितियाँ हैं, आपको केवल अपने युद्ध सम्मानों को याद करने की आवश्यकता है, केवल अपनी आँखों पर सवाल उठाने की। इस तरह के भाषण का अलंकारिक प्रभाव तीन गुना होता है।

सबसे पहले, अपील आत्मविश्वास की भावना पैदा करती है, यह पुष्टि करते हुए कि, जिस तरह समूह ने पहले जो आवश्यक था उसे पूरा करने में सफलता प्राप्त की, उसके पास फिर से सफल होने के लिए संसाधन और सहनशक्ति होगी। दूसरा, एक ऐसे उद्यम को छोड़ने की अनिच्छा है जिसमें पहले से ही इतना निवेश किया गया है। तीसरा, सामान्य श्रोताओं में डर की भावना पैदा करता है, कहीं ऐसा न हो कि वर्तमान में कार्य करने और दृढ़ता से काम करने में विफलता के कारण पिछली उपलब्धियाँ और सम्मान खराब हो जाएँ।

इब्रानियों के लेखक ने, अभिभाषक का ध्यान उनके पिछले धीरज और वफ़ादार कार्यों की ओर आकर्षित करते हुए, इस अलंकारिक उपकरण की त्रिगुण शक्ति का उपयोग किया है। हम इस मार्ग को पहले ही इस समुदाय के वास्तविक पिछले अनुभव के परिप्रेक्ष्य से परिचयात्मक खंड में खोज चुके हैं। यहाँ, हमें केवल उस प्रकरण के अलंकारिक उपयोग से चिंतित होने की आवश्यकता है जिसमें लेखक इसे रखता है।

यह उस वफ़ादारी का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसका परमेश्वर सम्मान करता है और उसे पुरस्कृत करता है। यह इस बात का सबूत देता है कि श्रोता वास्तव में दृढ़ रह सकते हैं, क्योंकि उन्होंने पहले भी शत्रुता का सामना करते हुए वफ़ादारी के लिए अपनी क्षमता साबित की है। इस अंश के दो तत्व विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

जब लेखक लिखता है, "तुमने दुखों की एक बड़ी प्रतियोगिता को सहन किया है" तो वह श्रोता के अपमान और दुर्व्यवहार के पिछले अनुभव की व्याख्या कर रहा है, वह अनुभव जिसने शुरू में उनके हाशिए पर होने को चिह्नित किया, पीड़ित होने के किसी दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव के रूप में नहीं बल्कि एक बड़ी प्रतियोगिता के रूप में। एथलेटिक इमेजरी के माध्यम से, वह अपमान और हाशिए पर होने के अनुभव को सम्मान के लिए एक प्रतियोगिता में बदल देता है, जिसे दबाव में झुकने से नहीं, बल्कि लड़ाई जारी रखने से जीता जाता है। इस तरह के एथलेटिक रूपक उस

अवधि की अल्पसंख्यक संस्कृतियों के साहित्य में आम हैं, चाहे वे ग्रीको-रोमन दार्शनिक ग्रंथ हों, यहूदी ग्रंथ हों या शुरुआती ईसाई ग्रंथ हों।

और ये रूपक उस संदेश को उलटने, यहाँ तक कि उलटने का एक साधन हैं, जिसे बाहरी लोग अपने विरोध और शत्रुता के माध्यम से संप्रेषित करना चाहते हैं। लेखक अध्याय 12, श्लोक 1 से 4 में रूपकों के इस क्षेत्र में अधिक विस्तार से लौटेगा। वहाँ, श्रोताओं से आग्रह किया जाएगा कि वे इस दुनिया में अपने जीवन को पाप और पापियों के खिलाफ़ एक प्रतियोगिता के रूप में देखें, जीत का पुरस्कार पाने का प्रयास करें, उनके सामने रखी गई आशा, उन कई लोगों के सामने जो पवित्र इतिहास में बहादुरी से और सफलतापूर्वक लड़े हैं। मैं यहाँ गवाहों के बादल की बात कर रहा हूँ, जिसका शायद बेहतर अनुवाद दर्शकों के बादल के रूप में किया जा सकता है जिसे लेखक अध्याय 11 में विश्वास के उदाहरणों की अपनी परेड में बनाता है।

दर्शकों के ऐसे समूह की स्वीकृति के लिए ही श्रोताओं को अपने विरोधियों, अपने शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों को संतुष्ट करने के बजाय संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। लेखक ने यहाँ इस अनुभव पर भी प्रकाश डाला है कि कम से कम कुछ विश्वासियों को अपनी संपत्ति जब्त होने से पीड़ा हुई, याद करते हुए कि कैसे उन्होंने इसे खुशी के साथ स्वीकार किया था, यह जानते हुए कि उनके पास अधिक और स्थायी संपत्ति है। सांसारिक दृश्यमान क्षेत्र से संबंधित संपत्तियाँ स्वर्गीय क्षेत्र में दी जाने वाली संपत्तियों की तुलना में कम मूल्य की हैं, क्योंकि केवल स्वर्गीय क्षेत्र ही उन चीजों के अंतिम समय में हटाए जाने से बच सकता है जिन्हें हिलाया जा सकता है।

जैसा कि लेखक ने अध्याय 1, श्लोक 10 से 12 में संकेत दिया है, और अध्याय 12, श्लोक 26 से 28 में फिर से स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करेगा। सांसारिक संपत्ति केवल अस्थायी सम्मान और आनंद प्रदान करती है। इसलिए, विश्वासियों को अपने दिलों को अपने स्थायी, स्थायी शहर में उनके लिए आरक्षित बेहतर और स्थायी धन पर केंद्रित रखने के लिए कहा जाता है।

लेखक ने संबोधित लोगों के पिछले कार्यों और प्रतिबद्धता, एक दूसरे के प्रति उनके साहस और उदारता के पिछले कार्यों को प्रशंसा और आत्म-सम्मान के कारणों में बदल दिया है ताकि उन्हें उसी कार्य-पद्धति में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। इसलिए लेखक उन्हें पद 35 और 36 में आग्रह करता है। अपने साहस को न छोड़ें, जो एक बड़ा प्रतिफल रखता है, क्योंकि आपको धीरज की आवश्यकता है ताकि, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बाद, आप वादा प्राप्त कर सकें।

साहस, जिसे ग्रीक में पारेसिया कहा जाता है, पूरे उपदेश में विषयगत रहा है। एक ओर, यह मसीह के माध्यम से मध्यस्थता से ईश्वर तक खुली पहुँच के संबंध में अभिभाषकों के आत्मविश्वास की बात करता है। जो लोग अब पुत्र के प्रति बेवफ़ाई और अनादर दिखाते हैं, वे निश्चित रूप से इस साहस को त्यागने के खतरे में हैं।

यह एक पूरक तरीके से, अभिभाषकों की अपनी आशा की खुली घोषणा को भी संदर्भित करता है जो समाज की शर्मनाक तकनीकों के प्रति उनके धीरज में परिलक्षित होती है, एक साहस जो उनके समाज द्वारा अपने विचलन नियंत्रण तकनीकों के लिए सबसे अधिक चुने गए लोगों के साथ

उनके खुले जुड़ाव तक भी फैला हुआ है। प्रबुद्ध होने के बाद, उन्होंने खुले तौर पर और आत्मविश्वास से लोगों की नज़रों में उन उपहारों के महत्व को प्रदर्शित किया जो उन्हें मसीह के माध्यम से ईश्वर से मिले थे और वे उपकार जिनकी उन्हें अभी भी उम्मीद थी। अपने पड़ोसी की अस्वीकृति के सामने इस तरह साहस का प्रदर्शन जारी रखने का मतलब है कि समय के अंत में ईश्वर के पास आत्मविश्वास से पहुँचने और ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के संबंध में उनके पास जो साहस है उसे बनाए रखना।

लेखक इस प्रकार विरोध और हानि के बावजूद धीरज, निरंतर संकल्प और साहस का आग्रह करता है ताकि श्रोता वास्तव में उस पुरस्कार में प्रवेश कर सकें जिसके लिए उन्होंने भी पहले ही बहुत कुछ निवेश किया है। लेखक यहाँ इस तरह से बात करता है जैसे कि किए जाने वाले निवेश का बड़ा हिस्सा पहले ही उनके पीछे हो चुका है। उन्होंने ईश्वर की इच्छा पूरी कर ली है और अब उन्हें केवल तब तक धीरज रखना है जब तक उन्हें अपना पुरस्कार न मिल जाए।

पुरस्कार की निकटता और, इस प्रकार, इस प्रतियोगिता में बचे हुए समय की छोटी अवधि लेखक की रणनीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यहाँ, इब्रानियों 10, श्लोक 37 और 38 में, लेखक इस बात पर जोर देने के लिए शास्त्र की भाषा का उपयोग करता है कि उनके पुरस्कार में प्रवेश करने से पहले शेष समय बहुत कम हो गया है। यह धारणा इब्रानियों 11 में विश्वास के नायकों की लंबी परेड द्वारा पुष्ट होगी, जो श्रोताओं को याद दिलाती है कि यह प्रतियोगिता कितने समय से चल रही है और वे इसमें कितनी दूर तक सूची में शामिल हो चुके हैं।

जैसा कि हम श्लोक 37 और 38 में पढ़ते हैं, अभी बहुत कम समय है, आने वाला आएगा और देर नहीं करेगा, और मेरा धर्मी जन विश्वास के आधार पर जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए, तो मेरा मन उससे प्रसन्न नहीं होगा। लेखक ने इस अंश में शास्त्र के कुछ रचनात्मक संकलन में भाग लिया है। सबसे पहले, वह पुरस्कार और न्याय के दिन की निकटता के भाव को बढ़ाने के लिए यशायाह 26, श्लोक 20 से बहुत कम समय में वाक्यांश उधार लेता है।

अपने मूल संदर्भ में, ये शब्द उस समय की अवधि के बारे में बात करते हैं जब परमेश्वर के लोगों को पृथ्वी के निवासियों को दंडित करने तक अपने कक्षों में छिपे रहने का निर्देश दिया जाता है। इस नए संदर्भ में, ये शब्द परमेश्वर या मसीह के आने वाले दर्शन की निकटता पर जोर देते हैं और थोड़े समय तक प्रतिबद्धता बनाए रखने में सहायता करते हैं। यह श्रोताओं के लिए उस विरासत की दहलीज पर होने की भावना को भी पुष्ट करता है, ठीक उसी जगह जहाँ जंगल की पीढ़ी थी जब वह लड़खड़ा गई और हमेशा के लिए आधारहीन अविश्वास और अवज्ञा का एक पैटर्न बन गई।

इस अंश का शेष भाग हबक्कूक 2, श्लोक 3 और 4 का एक मौलिक पुनर्लेखन है, और यहाँ हबक्कूक के हिब्रू पाठ से हबक्कूक के सेप्टुआजेंट अनुवाद से लेकर हिब्रू के लेखक द्वारा दिए गए पुनर्लेखित संस्करण तक की प्रगति को देखा जा सकता है, जिससे शास्त्र से वह सामग्री उस समय की पादरी आवश्यकताओं के लिए और भी अधिक उपयुक्त हो जाती है। हिब्रू बाइबिल में, हबक्कूक 2, श्लोक 3 और 4 में लिखा है, नियत समय के लिए एक दर्शन है। यह अंत की बात करता है, और यह झूठ नहीं बोलता।

अगर ऐसा लगे कि यह आने में देर कर रहा है, तो इसका इंतज़ार करो। यह ज़रूर आएगा और इसमें देरी नहीं होगी। गर्व को देखो।

उनकी आत्मा उनके अन्दर ठीक नहीं है, परन्तु धर्मी जन विश्वास से जीवित रहता है। यदि हम इसे सेप्टुआजेंट संस्करण में, हबक्कूक 2, 3 के यूनानी अनुवाद में पढ़ें, तो हमें कुछ महत्वपूर्ण अंतर मिलेंगे। अंत के लिए अभी भी एक दर्शन है, और यह अंततः प्रकाश में आएगा और व्यर्थ नहीं जाएगा।

यदि वह या वह देर करता है, तो उसका या उसके लिए प्रतीक्षा करें, क्योंकि आने वाला आएगा और देरी नहीं करेगा। ग्रीक में, सर्वनामों में एक निश्चित अस्पष्टता है कि क्या इसे इस रूप में पढ़ा जाना चाहिए, जो कि दर्शन को संदर्भित करता है, या वह के रूप में, जो आने वाले व्यक्ति की ओर देख रहा है। वास्तव में, ग्रीक अनुवाद भाषा को इस तरह से बदलता है कि हम किसी दर्शन के आने का इंतज़ार नहीं कर रहे हैं, बल्कि अब वास्तव में किसी के आने का, भविष्य में किसी व्यक्ति का इंतज़ार कर रहे हैं।

और फिर सेप्टुआजेंट में हबक्कूक 2, 4 की अगली आयत में, यदि वह पीछे हट जाए, तो मेरा मन उससे प्रसन्न नहीं होगा, परन्तु धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। इस पाठ के हिब्रू संस्करण में जो था वह यह है कि अभिमानी की निंदा को आने वाले के बारे में एक कथन में बदल दिया गया है, अर्थात् यदि आने वाला व्यक्ति कायरता दिखाता है, तो वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करेगा। इब्रानियों के लेखक ने जिस तरह से इसका अनुवाद किया है वह दोनों से अलग है।

आनेवाला आएगा, और विलम्ब न करेगा। और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। और यदि वह पीछे हट जाए, तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा।

इब्रानियों के लेखक ने हबक्कूक 2:4 के पहले भाग और हबक्कूक 2:4 के दूसरे भाग के क्रम को उसी तरह से बदल दिया है जैसा कि सेप्टुआजेंट संस्करण में बताया गया था। इस प्रकार, यदि वह पीछे हटता है, तो वह आने वाले पर लागू नहीं होता, बल्कि उन लोगों पर लागू होता है जो परमेश्वर के उद्धार की प्रतीक्षा करते हैं, धर्मी लोग। जो लोग परमेश्वर के उद्धार और विश्वास और दृढ़ता की प्रतीक्षा करते हैं, वे जीवित रहेंगे।

मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, जबकि जिनके हृदय विफल हो जाते हैं, जो पीछे हट जाते हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर पाएँगे। यह परिवर्तन सीधे लेखक के देहाती लक्ष्य को पूरा करता है। हबक्कूक पाठ अब कार्यवाही के दो तरीकों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है: भरोसा करना और दृढ़ रहना और पीछे हट जाना।

पहला रास्ता स्पष्ट रूप से जीवन की ओर ले जाता है, जबकि दूसरा रास्ता ईश्वर द्वारा निन्दा किया जाता है, जो उस मार्ग पर चलने वालों से प्रसन्न नहीं होता। इब्रानियों 10 पद 39 फिर हबक्कूक 2, 4 से दो मुख्य शब्दों का उपयोग करके एक विरोधाभास तैयार करके इस खंड का समापन करता है, पीछे हटना और विश्वास। हम उन लोगों में से नहीं हैं जो विनाश के लिए पीछे हटते हैं, बल्कि हम उन लोगों में से हैं जो जीवन के संरक्षण के लिए विश्वास करते हैं।

हबक्कूक 2, 4 में उन दो खंडों को फिर से लेखक द्वारा स्थानान्तरित करने से उसे दो समूहों और उनकी संपत्तियों के बीच अंतर करने की अनुमति मिलती है: वे जो भरोसा और दृढ़ता दिखाते हैं, जो अपने जीवन को बचाते हैं, और वे जो कायरता और अविश्वास दिखाते हैं, जो विनाश में गिर जाते हैं क्योंकि वे जंगल की पीढ़ी की तरह पापियों की शत्रुता के सामने पीछे हट जाते हैं। लेखक स्पष्ट रूप से श्रोताओं को पहले समूह के साथ पहचान करने के लिए रखता है, कम से कम दूसरे समूह के भाग्य से बचने के लिए। इब्रानियों 10:19 से 39 में, उपदेशक ने पाठ के एक बहुत ही केंद्रित हिस्से में बहुत अधिक बयानबाजी की है।

इन 21 आयतों में, उन्होंने श्रोताओं की भावनाओं को कई तरह से व्यक्त किया है। 10:19 से 25 में आत्मविश्वास और भय के बीच घूमते हुए, उपदेशक ने श्रोताओं को ईश्वर तक अपनी पहुँच के संबंध में आश्वस्त महसूस कराने की कोशिश की है क्योंकि वे यीशु द्वारा उनके लिए किए गए कार्यों को अच्छी तरह से पकड़ते हैं और उसका जवाब देते हैं। उपदेशक ने इसके बाद छंद 26 से 31 में भय की भावना को रणनीतिक रूप से व्यक्त किया है ताकि श्रोताओं में अपने वर्तमान परिस्थितियों में किसी भी तरह से कार्य करने के प्रति घृणा बढ़े जो उनके ईश्वरीय उपकारक के प्रति उपेक्षा या अपमान दर्शाता हो।

इसके बाद उन्होंने 32 से 36 आयतों में श्रोताओं के अपने पिछले उदाहरण का हवाला देते हुए आत्मविश्वास की एक और अपील की है, जिसमें दिखाया गया है कि उन्होंने पहले ही वह कर लिया है जिसे परमेश्वर महत्व देता है और सम्मान देता है, और यदि वे बस ऐसा करते रहें, तो वे वास्तव में उस अच्छे परिणाम पर पहुँचेंगे जिसका वादा परमेश्वर ने उनके लिए किया है। लेखक ने इस खंड को तर्कसंगत तर्क-वितर्क की अपीलों से भी भर दिया है, खासकर सापेक्ष लाभ, न्याय और व्यवहार्यता के शीर्षकों के तहत। लेखक ने श्रोताओं को उनके सामने मौजूद विकल्पों को तौलने और यह निर्धारित करने के लिए आमंत्रित करना जारी रखा है कि कौन सा विकल्प अधिक लाभप्रद होगा।

वह इन 21 आयतों में उनसे आग्रह करता है कि वे शाश्वत वस्तुओं और शाश्वत रूप से लाभकारी रिश्तों को थामे रहें, जिनका वे आनंद लेना शुरू कर चुके हैं और अस्थायी वस्तुओं और उन लोगों की दोस्ती का त्याग करने के लिए तैयार रहें जो परमेश्वर और उसके पुत्र को अस्वीकार करते हैं ताकि वे अपने वर्तमान परिस्थितियों में बुद्धिमानी से चुनाव करके शाश्वत पुरस्कार प्राप्त कर सकें। वह न्याय के विचारों को जोड़ता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए क्या देय है, इस पर विचार करता है जिन्होंने किसी को लाभान्वित किया है। इस प्रकार, वह श्रोताओं से ऐसे कार्यों से बचने का आग्रह करता है जो ब्रह्मांड में सबसे सम्माननीय और शक्तिशाली प्राणियों के प्रति अनादर दिखाते हैं या उन लोगों के प्रति कृतघ्नता दिखाते हैं जिन्होंने श्रोताओं के लिए शाश्वत रूप से मूल्यवान लाभ सुरक्षित करने के लिए अपना सब कुछ दिया है।

लेखक आगे व्यवहार्यता के विचार जोड़ता है। दर्शकों ने पहले भी और कठोर परिस्थितियों में सहन किया है। उनका अपना इतिहास दिखाता है कि वे जारी रखते हैं, वे अपने पीछे किए गए काम और निवेश की मात्रा के साथ सहन करना जारी रख सकते हैं।

अंत तक आगे बढ़ना इतना अधिक कठिन नहीं हो सकता। अंत में, इस पूरे अंश को रेखांकित करते हुए, लेखक श्रोताओं का ध्यान उनकी रोज़मर्रा की चुनौतियों और उन चुनौतियों को कम करने के तरीकों पर केंद्रित नहीं कर रहा है, जैसे कि ये प्राथमिक महत्व के विचार थे, बल्कि न्याय के दिन सफलतापूर्वक ईश्वर का सामना करने की अंतिम चुनौती पर केंद्रित कर रहा है, जो प्राथमिक महत्व की चुनौती है। यह, बदले में, रोज़मर्रा की कार्रवाई के तरीके को स्पष्ट रूप से उजागर करता है जिसे उन्हें अपनाना चाहिए।

लेखक के उपदेश का यह भाग हर युग में विश्वासियों की स्थिति के लिए विशेष चुनौतियों के बारे में भी बात करता है। विशेष रूप से, वह हमें अपने साथी ईसाइयों की दृढ़ता में निवेश करने के महत्व की याद दिलाता है। अध्याय 10, श्लोक 24 से 25 में, वह श्रोताओं से आग्रह करता है कि वे संगति से दूर न हों, बल्कि खुद को निवेश करते रहें, विशेष रूप से आने वाले दिन के प्रकाश में उस संगति के भीतर अपने बहनों और भाइयों को प्रोत्साहित करने में।

अध्याय 10, श्लोक 34 में, वह श्रोताओं की प्रशंसा करता है कि उन्होंने अतीत में एक-दूसरे में किस तरह से निवेश किया है, इस प्रकार भविष्य में उनके निरंतर कार्य को प्रोत्साहित करने की उम्मीद है। यह सब हमें इस उपदेश में फिर से याद दिलाता है कि ईसाई शिष्यत्व एक निजी मामला नहीं है, न ही यह एक व्यक्तिगत मामला है। व्यक्तिगत शिष्य अक्सर पराजित हो जाते हैं क्योंकि उनके दृढ़ता के खिलाफ काम करने वाले दबाव और उनकी दृढ़ता पर पड़ने वाले दबाव उनकी अपनी आंतरिक व्यक्तिगत सहन करने की क्षमता से अधिक होते हैं।

लेखक हमें इस तरह के दबावों का सामना करने में एक दूसरे का समर्थन करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम करने की जिम्मेदारी देता है ताकि हर कोई सहन कर सके। यह चुनौती हमारी स्थानीय कलीसियाओं से परे वैश्विक कलीसिया, विशेष रूप से कलीसियाओं और राष्ट्रों पर लागू होती है जहाँ ईसाइयों के पड़ोसी और अक्सर उनकी सरकारें यीशु के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को खत्म करने के लिए कड़ी मेहनत करती हैं। जैसा कि हम धर्मोपदेश में पढ़ते या सुनते हैं, आइए हम एक दूसरे को देखें, वास्तव में एक दूसरे को देखें, जब तक कि प्रेम और अच्छे कार्यों का विस्फोट न हो जाए।

इसे पढ़ते समय, हमें हमेशा अपने आस-पास की बहनों और भाइयों को ही नहीं बल्कि सताए गए चर्च में अपने परिवार को भी ध्यान में रखना चाहिए, जो यीशु की बहनों और भाइयों में सबसे कमतर हैं, जिनके लिए हमारा समय पर हस्तक्षेप वास्तव में उन प्रार्थनाओं का उत्तर हो सकता है जो वे अनुग्रह के सिंहासन के सामने भेज रहे हैं। लेखक हमें इस तरह जीने की चुनौती भी देता है कि हम हमेशा अपने दिव्य संरक्षक और उनके उपहारों का सम्मान करें। ईश्वर के साथ घनिष्ठ संगति और ईश्वर को क्या मंजूर है, इसका ज्ञान प्राप्त करने के बाद, हम उनका अपमान करेंगे यदि हम दुनिया की शत्रुता के डर को हमें यीशु ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसकी गवाही देने या ईश्वर द्वारा हमें जिस भी कार्य को करने के लिए बुलाया गया है, उसका अनुसरण करने से रोकने दें।

अगर हम दुनिया के साथ अपनी खोई हुई दोस्ती के लिए पछतावे के कारण क्रूस के रास्ते पर अपने पैरों को घसीटते हैं, तो हम फिर से देने वाले और ईश्वर की दोस्ती के मूल्य का अपमान

करते हैं। अगर हम यह सोचना शुरू कर दें कि मसीह का अनुसरण करने का मतलब बहुत कुछ त्यागना है, तो हम उन विशेषाधिकारों और लाभों के प्रति कम सम्मान दिखाते हैं जो मसीह का अनुसरण करने से हमें मिले हैं। इसके बजाय, हमारे जीवन को उस उपहार के महान मूल्य को प्रतिबिंबित करना चाहिए जो हमें मिला है, जिसका अर्थ है ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के साथ प्रतिक्रिया करना जो हृदय, मन, शरीर और इच्छा को गले लगाता है।

यदि हम सफलता, सम्मान या बुद्धिमान होने के बारे में अधिक परवाह करते हैं, जैसा कि यह दुनिया उन्हें परिभाषित करती है, यदि हम इसके नियमों का पालन करते रहते हैं और अपनी महत्वाकांक्षाओं को इसके वादों पर टिकाते हैं, तो हम यीशु को रौंदते हैं। यदि हम उस जीवन में चलने से इनकार करते हैं जिसके लिए उसने हमें मुक्त किया है, तो हम उसके खून को बहुत कम महत्व देते हैं। हम परमेश्वर के अनुग्रह का अपमान करते हैं यदि हम पहले दुनिया का अनुग्रह प्राप्त करना चाहते हैं, और फिर, जहाँ तक दुनिया हमें अनुमति देती है, परमेश्वर के वादा किए गए लाभों को प्राप्त करना चाहते हैं।

अगर हमारा पहला विचार अपने पड़ोसियों, अपने सहकर्मियों या अपने साथी नागरिकों की स्वीकृति को बनाए रखने का है, और अगर हम अपने ईसाई जीवन को ऐसे व्यवहार या शब्दों के मापदंडों के भीतर जीने की कोशिश करते हैं जो अविश्वासियों को नाराज़ नहीं करेंगे, तो हम अपने जीवन से दिखाते हैं कि किसकी स्वीकृति वास्तव में हमारे लिए मायने रखती है, और हम परमेश्वर का अपमान करते हैं। अगर हम अपने समाज द्वारा बताई गई हर बात पर कर्तव्यनिष्ठा से ध्यान देते हैं और फिर धार्मिक चिंताओं को अपना समय, संसाधन और ऊर्जा देते हैं, तो हम परमेश्वर से कहते हैं, आपके उपहार और बुलावा मेरे जीवन में पहले क्रम के महत्व के नहीं हैं। इब्रानियों के लेखक हमें अपने विकल्पों, कार्यों और महत्वाकांक्षाओं को चीज़ों के वास्तविक मूल्य को दर्शाने और अपने पूरे जोश और पूरे भरोसे, दृढ़ प्रतिबद्धता और विश्वास के साथ परमेश्वर के वादों का पालन करने के लिए कहते हैं, किसी भी सांसारिक वस्तु को हमें विचलित या विलंबित न करने दें।

ईश्वर से हमें जो उपहार मिले हैं, उनकी असीमता का चिंतन भी प्रलोभन के विरुद्ध एक शक्तिशाली औषधि प्रदान करता है। यीशु ने हमारे लिए जो शुद्धिकरण किया है, ईश्वर के साथ हमारी अंतरंग पहुँच, पवित्र आत्मा की दैनिक मित्रता, तथा ईश्वर ने विश्वासियों के लिए जो नियति निर्धारित की है, उसके प्रकाश में। क्या हम वास्तव में खुद को उस विशेष पाप के हवाले कर देना चाहते हैं जो हमें इस समय घेरे हुए है, चाहे वह कुछ भी हो? क्या हम ईश्वर को कड़वाहट लौटाना चाहते हैं, जिसने हमें केवल अच्छाई प्रदान की है? यह अंश सुझाव देता है कि हमें ईश्वर के उपहारों के मूल्य तथा कृतज्ञता की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करना चाहिए, जब हम किसी गंभीर दुविधा का सामना करते हैं या किसी ऐसे कार्य पर विचार करते हैं, जो यद्यपि अल्पावधि में आसान या लाभदायक या सुखद है, फिर भी पापपूर्ण है।

चर्च के बाहर की दुनिया के साथ हमारे मुठभेड़ में भी हमें साहस के लिए बुलाया जाता है। ऐसे कई दबाव हैं जो ईसाई गवाह और शिष्यत्व दोनों के संबंध में लोकतांत्रिक ग्रीक शहर-राज्य में मुक्त भाषण, पारेसिया या साहस को बाधित करते हैं। पश्चिमी दुनिया में, धर्म के निजीकरण ने

एक ऐसी संस्कृति बनाई है जिसमें ईश्वर के बारे में भाषण केवल कुछ स्थानों, चर्चों, घरों और इसी तरह के स्थानों पर ही उचित है।

धर्मनिरपेक्षता एक ऐसा माहौल बनाती है जिसमें धार्मिक गतिविधियों में कुछ निवेश उचित है, हालांकि वैकल्पिक है, लेकिन बहुत अधिक निवेश को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। भौतिकवाद, यह दृष्टिकोण कि मूर्त दुनिया प्राथमिक दुनिया है, एक ऐसी संस्कृति को जन्म देती है जिसमें लौकिक चिंताओं के बारे में बात करना कहीं अधिक आसान और अधिक आरामदायक है। इस प्रकार, मौसम, राजनीति, फिल्में और इस तरह की बातें हमारे प्रार्थना और ध्यान के समय में ईश्वर के हमारे अनुभवों, कुछ पापों के खिलाफ संघर्ष में हमारी प्रगति और ईश्वर की चुनौतियों और आह्वान के बारे में हमारी धारणाओं की तुलना में बातचीत के अधिक लगातार विषय हैं।

कई गैर-पश्चिमी देशों में बाधाएँ कहीं ज़्यादा भयावह हैं। ऐसी सभी बाधाओं को देखते हुए, इब्रानियों के लेखक का वचन स्पष्ट है। अपनी हिम्मत मत खोइए।

या, यदि आपने अभी तक अपना साहस प्रदर्शित नहीं किया है, तो अपने जीवन के हर पहलू में, आपको छुड़ाने और मुक्ति दिलाने वाले परमेश्वर के प्रति वचन और कर्म से गवाही देने की अपनी स्वतंत्रता को खोजिए।